

सुरेन्द्र मोहन पाठक

Vol - 2

सम्पूर्ण कथा साहित्य

वह रात

हमारे धन्धे में कई बार ऐसा होता है कि कई केस अनसुलझे ही हमारी फाइलों में दफन हो जाते हैं लेकिन उनकी उलझन भरी बातें दिमाग में प्रश्न चिन्ह बनकर घूमती रहती हैं और फिर कई महीनों या वर्षों के बाद कोई ऐसी घटना घटित हो जाती है, कोई एक ऐसा तथ्य सामने आ जाता है जो सारे केस को सहज ही सुलझाकर रख देता है । पूरी समस्या हल हो जाती है और सारी बात आंखों के सामने दिन की तरह स्पष्ट हो जाती है, और मजे की बात यह है कि जब हम खोजबीन के चक्कर में जान लड़ा देते हैं, तब तो कोई हल हाथ में आता नहीं और जब हम असहाय होकर चुपचाप बैठ चुके होते हैं तो बिना हमारे तनिक भी प्रयत्न के सब कुछ स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है ।

ऐसे ही एक केस का वर्णन मैं यहां करने जा रहा हूं ।

एक दिन सुबह-सवेरे दयावती नाम की एक प्रौढ़ महिला मेरे पास आई ।

“मैं आपसे अपनी एक किरायेदार के विषय में मिलना चाहती हूं ।” - उन्होंने बताया ।

मैं समझा कोई किराये का झगड़ा होगा, इसलिये कह उठा - “लेकिन आपके किसी किरायेदार में मेरी क्या दिलचस्पी हो सकती है ?”

“लेकिन मेरी किरायेदार को आपमें बहुत दिलचस्पी है । वह आपसे मिलने के लिए बेहद उत्सुक है और इसी

सिलसिले में मैं आपको बुलाने आई हूं ।"

"यानी कि आपकी किरायेदार को विशेष रूप से मेरे में दिलचस्पी है किसी और पुलिस आफिसर में नहीं ?" - मैंने हैरान होकर पूछा ।

"जी नहीं । उसकी दिलचस्पी केवल आप में ही है ।"

"आपकी किरायेदार का नाम क्या है ?"

"पूरा नाम मुझे मालूम नहीं है । मैं केवल उसे मिसेज स्मिथ के नाम से जानती हूं ।"

"कोई विदेशी महिला है ?"

"मालूम नहीं ।"

"क्या मतलब ?"

"मैंने अर्ज किया है कि मालूम नहीं है कि मेरी किरायेदार विदेशी महिला है या भारतीय ।"

मैं हैरानी से उनका मुंह देखता रहा ।

"मैं वाकई सच कह रही हूं इन्स्पेक्टर साहब । मिसेज स्मिथ सात साल से मेरी किरायेदार हैं लेकिन इन लम्बे सात सालों में एक ही इमारत में रहने के बावजूद भी मैंने एक बार केवल एक बार उसका चेहरा देखा है और..." - दयावती शरीर में एक कंपकंपी सी दौड़ गई - "और अब भी मैं भगवान से यही प्रार्थना करती हूं कि मुझे मिसेज स्मिथ का चेहरा न ही दिखाई देता ।"

"क्या ऐसा ही बदसूरत चेहरा था ?" - मैंने उत्सुकता से पूछा ।

"बदसूरत । इन्स्पेक्टर साहब, चेहरा तो वह था ही नहीं । मुझे तो उसकी गरदन के ऊपर का केवल एक आकार का ही आभास मिला था, नाक नक्शा तो उस पर था ही नहीं । दो गहरे खड्डों में से झांकती हुई दो भयावनी आंखें... मैं उस चेहरे की वीभत्सता का वर्णन नहीं कर सकती इन्स्पेक्टर साहब । आप इस बात से अनुमान लगा लीजिए कि एक बार वह अपने कमरे की खिड़की पर खड़ी थी और हमारे दूधिए ने लान में खड़े हुए, उसके चेहरे की एक झलक देखी थी । उसके हाथ से दूध का बर्तन गिर गया था और वह चीखें मारता हुआ वहां से भागा था । मिसेज स्मिथ हर समय अपना चेहरा नकाब जैसे एक कपड़े से ढके रहती है, जिसमें से केवल आंखें और भवें ही दिखाई देती हैं । उसकी जरा असतर्कता के कारण नकाब उसके चेहरे से सरक गई थी, और मेरी नजर उसके भयानक चेहरे पर पड़ गई नी । तब उसने मुझे कहा था - "बहन जी, अब आप समझ ही गई होंगी कि मैं क्यों हर समय अपना चेहरा ढके रहती हूं ।"

मेरी दिलचस्पी जाग उठी थी ।

"आप उसके पिछले जीवन के विषय में कुछ नहीं जानतीं हैं ?"

"नहीं ।"

"उसने कभी जिक्र भी नहीं किया ?"

"नहीं ।"

"और आपने पूछा भी नहीं ?"

"प्रश्न ही नहीं उठता था । मिसेज स्मिथ ने मुझे आशा से अधिक किराया दिया था, छ: महीने का एडवान्स दे दिया था और किसी मामले में कोई हील हुज्जत नहीं की थी । मैं समझती थी कि एकांत प्रिय महिला है किसी से मिलना-जुलना पसन्द नहीं करती तो मुझे क्या ।"

"लेकिन उसे आप ही का घर क्यों पसन्द आया ?"

"क्योंकि वह भीड़-भाड़ में रहना नहीं चाहती । मेरा घर वैसे भी मुख्य आबादी से थोड़ा हटकर है और मैं वहां अकेली रहती हूं अर्थात मेरे घर में उसे दुनिया की नजरों से स्वयं को बचाए रखने की पूरी सुविधा है । सात साल पहले उसने मकान मेरे एक परिचित के जरिये लिया था ।"

"लेकिन मैं इस तस्वीर में कहां फिट होता हूं । आपकी किरायेदार मुझसे क्यों मिलना चाहती है ?"

"बताती हूं ।" - दयावती बोली - "पिछले कुछ दिनों से मेरी किरायेदार बहुत बेचैन रहने लगी है । रात को कई बार मैंने उसे विक्षिप्तों की तरह चिल्लाते सुना है । वह एकाएक चिल्ला उठती है - नृशंस ! दरिन्दे ! हत्या ! हत्या ! - जैसे उसे हिस्टीरिया का दौरा पड़ा हो । उसका स्वास्थ्य गिरता जा रहा है । ऐसा लगता है जैसे उसके मन पर भारी बोझ है । मैंने उसे एक बार कहा भी था कि, मिसेज स्मिथ, अगर आपका मन अशान्त रहता है तो भगवान का नाम लिया करो । आप कई बार हत्या, हत्या चिल्ला उठती हैं । अगर तुम्हें किसी से भय है तो मैं पुलिस में रिपोर्ट करूं ? लेकिन उसने फौरन इन्कार कर दिया और बोली कि जिन गुनाहों का बोझ मेरे दिमाग पर है उससे न भगवान का नाम मुझे छुटकारा दिला सकता है

और न पुलिस । मेरा दिल तो किसी के सामने अपराध स्वीकार कर लेने में ही हल्का हो सकता है । फिर मैंने आपका नाम लिया कि आप बड़े सहृदय व्यक्ति हैं, शायद आप उसकी कोई सहायता कर सकें । आपका नाम सुनते ही वह उछल पड़ी और बोली - बहन जी उन्हें बुला लाओ । भगवान के लिए उन्हें बुला लाओ और अगर वे न आयें तो उन्हें कहना कि मैं स्मिथ सरकस के मिस्टर स्मिथ की पत्नी हूं । और उन्हें अब्बास परवा का नाम बता देना । वह कहती थी कि अगर आप वही मिस्टर जगतपाल हैं तो अब्बास परवा का नाम सुनकर जरूर चले आयेंगे ।"

"मिसेज स्मिथ ने झूठ नहीं कहा था ।" - मैंने कहा - "अगर आपकी किरायेदार ने अब्बास-परवा का नाम लिया है और वह स्मिथ सरकस वाली ही मिसेज स्मिथ है तो उससे अधिक उत्सुक मैं हूं, इस मुलाकात में । मिसेज स्मिथ से कह दीजिए कि मैं तीन बजे तक उनके पास पहुंच जाऊंगा ।"

दयावती के जाते ही मैं पुरानी फाइलों को कुरेदने में जुट गया । अब्बास-परवा ट्रेजेडी में सरकारी तौर पर मेरी कोई दिलचस्पी नहीं थी । अब्बास-परवा में मेरा खानदानी घर था और उन दिनों मैं वहां छुट्टियां मनाने आया हुआ था । स्मिथ के सरकस का नाम उन दिनों बच्चे-बच्चे की जबान पर होता था । मेरी छुट्टियों के दौरान में ही सरकस वाले एक रात के लिए अब्बास-परवा रुक गए थे । अब्बास-परवा एक छोटा-सा गांव है, वहां तो इतने बड़े सरकस का कोई शो होने का प्रश्न ही नहीं उठता था । केवल रात गुजारने के लिए ही वे वहां रुके थे ।

उनके सरकस में उत्तरी अफ्रीका का एक बड़ा भयानक शेर था । किसी आदमी का उसके पास फटकने का भी

हौंसला नहीं होता था । उसके पिंजरे के आसपास भी कोई आदमी आ जाता था तो वह ऐसी दहाड़ मारता था कि सुनने वालों के प्राण कांप जायें । लेकिन स्मिथ और उसकी पत्नी के साथ वह किसी हद तक हिला हुआ था । शेर को उसका भोजन देने के लिए भी वही दोनों उसके पिंजरे तक जाने का साहस कर पाते थे । शेर भी उन्हें पहचान गया था और उनके साथ बेहद शराफत से पेश आता था ।

आज से सात वर्ष पहले अब्बास-परवा की उस रात को फिर एक ऐसी भयानक घटना घटी जिसकी वास्तविकता आज भी सन्देह का विषय है ।

हुआ यह कि लगभग आधी रात को सारी सरकस शेर की दहाड़ों और एक स्त्री की चीखों से गूंज गई । सरकस के कर्मचारी अपने टेन्टों में से लालटेनें लिए हुए घटनास्थल की ओर भागे और फिर जो दृश्य उन्हें दिखाई दिया, वह किसी का भी खून जमा देने के लिए पर्याप्त था ।

स्मिथ शेर के पिंजरे से लगभग दस गज दूर जमीन पर औंधा पड़ा था । उसकी खोपड़ी बुरी तरह कुचली पड़ी थी और चकनाचूर हुई खोपड़ी के आसपास शेर के पंजों के गहरे निशान थे । शेर के पिंजरे का द्वार खुला पड़ा था । पिंजरे के द्वार के पास मिसेज स्मिथ पीठ के भार जमीन पर पड़ी थी और शेर उसकी छाती पर पांव जमाये अगला वार करने के लिए तैयार खड़ा था । शेर ने उसका चेहरा इस बुरी तरह उधेड़कर रख दिया था कि उस समय हैरानी होती थी कि वह जीवित कैसे रही । सरकस के कर्मचारियों में एक हेनरी नाम का बाडी बिल्डर था और एक था सैडलर नाम का जोकर । दोनों ने हौंसला करके लम्बे-लम्बे बांसों की सहायता से शेर को रगेद कर मिसेज स्मिथ के ऊपर से हटाया और उसे पिंजरे

में बन्द कर दिया । शेर पिंजरे में से निकल कैसे आया ? यह आज भी रहस्य का विषय है । उस समय तो यही अनुमान लगाया था कि उन दोनों ने खाना लेकर पिंजरे में प्रवेश करने कि चेष्टा की होगी, किसी कारणवश शेर भड़क गया होगा और उन पर कूद पड़ा होगा । कर्मचारियों की शहादत में सबसे दिलचस्प बात यह मालूम हुई थी कि मिसेज स्मिथ दुर्घटना के बाद कितनी ही देर तक विक्षिप्तावस्था में चिल्लाती रही थी - कायर ! कायर ! डरपोक !

लगभग छ: मास बाद मिसेज स्मिथ की हालत सुधरी । लेकिन तब तक पुलिस मिस्टर स्मिथ की हत्या के केस को दुर्घटना द्वारा हत्या मानकर बन्द कर चुकी थी ।

इसे केस की तहकीकात थानेदार चरणसिंह ने की थी । अब्बास-परवा में मेरा घर था इसलिए मेरी उससे अच्छी-खासी जान-पहचान थी । केस तो उसने दुर्घटना द्वारा हत्या लिखकर बन्द कर दिया था लेकिन दो एक बातें थीं जो उसे हर समय परेशान किए रहती थीं और हम दोनों उन पर कुछ दिन खूब बहस भी करते रहे थे ।

एक तो शेर का व्यवहार किसी प्रकार तस्वीर में फिट नहीं होता था । द्वार खुलने पर शेर ने जो कुछ किया था अगर उसकी कल्पना की जाए तो वह युक्तिसंगत नहीं लगता था । शेर पिंजरे में से निकला, और एकदम सामने की ओर झपटा और दस गज दूर खड़े स्मिथ के सिर पर पहुंच गया । स्मिथ एकदम घूमकर वापिस भागा लेकिन शेर के पंजे के एक वार ने उसकी खोपड़ी तोड़ दी और धाराशाई कर दिया । और फिर बजाए इसके कि शेर अपनी स्वतन्त्रता का लाभ उठाकर भाग निकलता, वह फिर पिंजरे की ओर वापिस आया जहां मिसेज स्मिथ खड़ी थी और उसको गिराकर उसकी छाती पर

चढ़ बैठा । और मिसेज स्मिथ की कायर ! कायर ! की चिल्लाहट समझ में नहीं आती । आखिर वह अपने पति से किस प्रकार की बहादुरी की आशा रखती थी । वह बेचारा अपनी पत्नी की सहायता के लिये कर ही क्या सकता था ।

दूसरी बात -

इस घटना के कुछ दिनों बाद पता लगा था कि शेर की दहाड़ों और मिसेज स्मिथ की चीखों के साथ-साथ एक आदमी की भी भय भरी चिल्लाहट सुनी गई थी । उस समय ख्याल था शायद स्मिथ चिल्लाया था लेकिन यह विचार बाद में असम्भव लगने लगा था क्योंकि उसके प्राण तो पहले निकल चुके थे ।

थानेदार चरणसिंह के ख्याल से घटना इस प्रकार हुई होगी - "वे दोनों शेर के पिंजरे से दस गज की दूरी पर होंगे" - उसने कहा था - "उसी समय शेर किसी प्रकार पिंजरे में से निकल गया होगा । मिसेज स्मिथ अपने बचाव के लिए पिंजरे की और भागी होगी ताकी वह भीतर घुसकर द्वार बन्द कर लेती और बाहर खड़ा शेर उसके पास न पहुंच सके । लेकिन अभी वह पिंजरे के द्वार पर ही पहुंची होगी कि शेर उस पर भी टूट पड़ा होगा । मिसेज स्मिथ को अपने पति पर क्रोध आया होगा कि अगर वह घूमकर भागने की चेष्टा न करता तो शायद शेर उस पर हमला न करता क्योंकि उनसे काफी हिला-मिला हुआ था । अगर वे शेर के सामने तटस्थ खड़े रहते और भय का प्रदर्शन न करते तो शायद शेर उनका कुछ भी न बिगाड़ता इसलिए वह चिल्ला पड़ी थी - कायर ! कायर !"

"सारी थ्योरी में एक ही गड़बड़ है, चरणसिंह ।" - मैंने

कहा था ।

"क्या ?"

"अगर वे दोनों पिंजरे से दस गज दूर थे तो पिंजरा कैसे खुल गया ?"

"शायद उनका कोई दुश्मन हो जिसने चुपचाप द्वार खोल दिया हो ।"

"तो फिर शेर उन पर झपट क्यों पड़ा जबकि वह उन दोनों से हिला मिला हुआ था कि वे उसके पिंजरे के भीतर घुसकर उसके साथ खिलवाड़ भी कर आते थे ?"

"शायद उसी दुश्मन ने किसी प्रकार शेर को भड़का दिया हो ।"

तर्क युक्तिसंगत तो नहीं था लेकिन एकदम असम्भव नहीं कहा जा सकता था । इस विषय में तो कोई सन्देह ही नहीं था कि स्मिथ बहुत बुरा आदमी था और अपने कर्मचारियों में बेहद बदनाम था । लोग उससे आतंकित रहते थे क्योंकि कई बार तो वह जरा सी गलती पर पीट भी दिया करता था ।

सात साल गुजर गए और किसी भी सन्देह का निवारण नहीं हो सका । सारी घटना मेरे दिमाग से भी उतर चुकी थी कि आज दयावती मिसेज स्मिथ का संदेश लेकर आ गई और अब्बास-परवा में घटी सारी घटनायें एक बार फिर साकार हो उठीं ।

दोपहर के थोड़ी देर बाद ही मैं श्रीमती दयावती के घर

पहुंच गया । वे मुझे फौरन ही मिसेज स्मिथ के कमरे में ले गई । कमरा क्या था पिंजरा था । सब खिड़कियां दरवाजे बन्द थे ताकि किसी असतर्क क्षण में किसी पड़ोसी की नजर मिसेज स्मिथ के चेहरे पर न पड़ जाये ।

मिसेज स्मिथ कमरे के एक कोने में बैठी थी । चेहरा ढका होने के बावजूद भी उस औरत के शानदार व्यक्तित्व में कोई विशेष अन्तर नहीं आया था । शरीर अब भी सांचे में ढला मालूम होता था । सात वर्ष पहले तो वह वाकई अद्वितीय सुन्दरी रही थी ।

"मुझे विश्वास था, मिस्टर जगतपाल ।" - मिसेज स्मिथ बोली - "कि मेरा नाम सुनकर आप जरूर यहां चले आयेंगे ।"

"लेकिन आपको यह कैसे मालूम था कि अब्बास-परवा की ट्रेजेडी में मेरी भी दिलचस्पी है ?" - मैंने पूछा - "आफिशियली तो इस मामले से मेरा कोई सम्बन्ध था नहीं ।"

"मुझे थानेदार चरणसिंह ने आपके विषय में बताया था ।"

"अब आपने मुझे क्यों बुलाया है ?" - मैं सीधा मतलब की बात पर आता हुआ बोला ।

"आप भगवान को मानते हैं, मिस्टर जगतपाल ?"

"नास्तिक तो नहीं हूं मैं ।"

"आप यह मानते हैं कि कोई अगर सच्चे दिल से अपना

गुनाह कबूल कर ले तो भगवान उसे माफ कर देता है ?"

"आप यह सब क्यों पूछ रही हैं ?" - मैंने हैरान होकर पूछा ।

वह कुछ क्षण चुप रही और फिर धीरे से बोली - "मैंने अब्बास-परवा की ट्रेजेडी के विषय में पुलिस को सही बयान नहीं दिया था ।"

"क्यों ? आपने झूठ क्यों बोला था ?"

"क्योंकि मेरे बयान पर किसी आदमी का भविष्य निर्भर करता था । अगर उस समय मैं सच बोल देती तो उसका भारी अहित होने की सम्भावना थी । उस आदमी से मेरे बड़े गहरे सम्बन्ध थे और मेरी अन्तरात्मा मुझे उसके साथ विश्वासघात नहीं करने देती थी । लेकिन अब उसके प्रति मेरी जिम्मेदारी समाप्त हो गई है ।"

"कैसे ?"

"वह व्यक्ति मर गया है । अब मैं किसी को सच्ची घटना बतला कर अपनी आत्मा के बोझ को हल्का करना चाहती हूं ।"

"तो फिर आप अपना बयान पुलिस को क्यों नही देती हैं ?"

"क्योंकि मैं पब्लिसिटी नहीं चाहती । मैं नहीं चाहती कि मेरे नाम को लेकर कोई शोर शराबा मचे । मेरा जीवन समाप्त प्राय ही है और मैं चाहती हूं कि मैं शांति से मर सकूं । इसीलिए मैंने वह भयानक कहानी सुनाने के लिए आपको

चुना है ।"

"लेकिन मैं भी तो सरकारी कर्मचारी हूं । सम्भव है आपकी सारी कहानी सुन लेने के बाद मैं ही सारी घटना का ब्यौरा पुलिस तक पहुंचा देना अपना कर्तव्य समझने लगूं ।"

"सम्भव है । लेकिन मैं यह रिस्क लेने के लिए तैयार हूं । आपके सामने मन का बोझ हल्का कर चुकने के बाद मैं शांति से मर सकूंगी ।"

"मैं आपकी कहानी सुनने के लिए बेहद उत्सुक हूं ।" - मैंने कहा ।

"मिस्टर जगतपाल" - वह अतीत की गहराइयों में डूबती हुई बोली - "मेरा पति स्मिथ मुझसे आयु में पन्द्रह वर्ष बड़ा था । सत्तरह वर्ष की आयु में मेरी उसके साथ शादी हुई थी और शादी के उस दिन से लेकर उसकी मृत्यु तक मैंने भयानक नरक भुगता था । स्मिथ आदमी नहीं था, कसाई था । ऐसा आदमी था कि सरकस के किसी कर्मचारी से मुझे बात भी करते देख लेता था तो वह मेरी चमड़ी उधेड़ कर रख देता था । वह मुझे खम्बे से बांध देता था और फिर घोड़ों वाली चाबुक से मुझे पीटा करता था । सब को स्मिथ से घृणा थी और मुझ से भरपूर सहानुभूति थी लेकिन वे कर क्या सकते थे । उसके दुर्व्यवहार के कारण कई बढ़िया आर्टिस्ट हमें छोड़कर चले गए लेकिन फिर भी सरकस किसी प्रकार मेरे, बाडी बिल्डर हेनरी और जोकर सैडलर के दम पर चलता रहा । हेनरी को मुझसे सच्ची हमदर्दी थी । मेरी दुर्दशा देखकर उसका खून खौल जाता था लेकिन वह कुछ कर ही नहीं पाता था । यही हमदर्दी की भावना हमें इतने समीप ले आई कि हम एक दूसरे से प्रेम करने लगे । मेरे पति को मुझ पर

सन्देह तो था लेकिन हेनरी के विशाल शरीर से वह भी डरता था । हेनरी का बदला भी वह मुझे दुख देकर चुकाता था । जब भी उसे हेनरी पर क्रोध आता था, वह मुझे तकलीफ देना आरम्भ कर देता था । फिर एक दिन मेरी दर्द भरी चीखों का हेनरी पर इतना प्रभाव पड़ा कि उसने स्मिथ की हत्या करने की तरकीबें सोचनी आरम्भ कर दीं । हेनरी की एक स्कीम के अनुसार हमने एक लोहे का भारी डंडा लिया और उसके एक सिरे पर शेर के पंजे की शक्ल के लोहे के पांच बेहद तीखे और लम्बे नाखून बांध दिये । स्कीम यह थी कि लोहे के उस पंजे के वार से स्मिथ की हत्या कर दी जायेगी और फिर शेर को खुला छोड़ दिया जायेगा जिससे ऐसा लगे कि स्मिथ शेर का शिकार हुआ है । एक अन्धेरी रात को मैं और स्मिथ शेर के लिए भोजन लेकर उसके पिंजरे की ओर गए । हेनरी पिंजरे से थोड़ी दूर राह में ही छुपा खड़ा था । स्मिथ के वहां से गुजरते ही उसे लोहे के पंजे का वार स्मिथ पर कर देना था । लेकिन हेनरी फुर्ती से काम नहीं कर सका इसलिए हम उसके पास से गुजर कर पिंजरे की ओर बढ़ गए । हेनरी भी दबे पांव हमारे पीछे-पीछे आया और जब हम पिंजरे से लगभग दस गज की दूरी पर थे तो उसने लोहे के पंजे के एक ही प्रचण्ड वार से स्मिथ की खोपड़ी चकनाचूर करके रख दी खून से लथपथ स्मिथ वहीं ढेर हो गया । मैं पिंजरे की ओर लपकी ताकि उसका द्वार खोल दूं और वहीं सब कुछ गड़बड़ा गया । ताजे खून की गन्ध शेर फौरन पहचान गया था और वह बुरी तरह उत्तेजित हो उठा था । मेरे द्वार खोलने भर की देर थी कि वह बिजली की तरह मुझ पर झपट पड़ा । हेनरी अगर उस समय चाहता तो मुझे बचा सकता था । उसके हाथ में लोहे का भयानक पंजा था । अगर वह सामने आकर उसका एक वार शेर पर कर देता तो शेर ने चुपचाप पिंजरे में घुस जाना था । लेकिन वह तो अपना संतुलन खो चुका था ।

मैंने उसे भय से चिल्लाते हुए सुना, फिर वह एकदम घूमा और वहां से भाग लिया । उसी समय शेर के दांत मेरे चेहरे में गड़ गए । मैं अपने हाथों से शेर को धकेलने की चेष्टा कर रही थी । और सहायता के लिए चिल्ला रही थी । क्रोध के कारण हेनरी के लिए मेरे मुंह से गालियां निकल रही थीं । मैं चीख-चीखकर उसे कायर डरपोक, कह कह कर कोस रही थी । भय और दर्द के कारण मेरी चेतना लुप्त होती जा रही थी । मुझे इस बात की धुंधली सी याद है कि हेनरी और सैडलर ने बाद में मुझे शेर के नीचे से निकाला था । जब मुझे होश आया और मैंने शीशे में अपना चेहरा देखा तो मैंने शेर को हजार-हजार गालियां दीं - इसलिए नहीं कि उसने मेरा सौंदर्य नष्ट कर दिया था बल्कि इसलिए कि उसने मुझे मार क्यों नहीं डाला था । उस दिन से आज तक, मिस्टर जगतपाल मैं अपने चेहरे को एक पाप की तरह छुपाए हुए हूं । इसीलिए मैं ऐसी जगह रह रही हूं जहां मेरा कोई पूर्व परिचित मुझे देख न ले । इसके अतिरिक्त और मैं कर भी क्या सकती थी और यही कुछ मैंने किया भी । मैं तो एक घायल जानवर की तरह अपनी मांद में घुसी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रही हूं । यही मेरा अन्त है ।"

मिसेज स्मिथ चुप हो गई ।

सारी घटना सुनने के बाद मैं भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका, मेरा मन भर आया ।

"भगवान की लीला को कौन समझ सकता है ।" - मैंने मूर्खों की तरह ये घिसे पिटे शब्द दोहरा दिए - "जीवन भी कितना बड़ा मजाक बन गया है ।" - वह चुप रही ।

"लेकिन हेनरी का क्या हुआ ?" - मैंने फिर पूछा ।

"उस दिन के बाद न तो मैंने उसे फिर देखा और न ही उसके विषय में कुछ सुना । बाद में जो भला बुरा मैंने उसे कहा था, उसके लिए मुझे दुःख ही हुआ । किसी औरत का प्यार आसानी से एक ओर उठाकर नहीं रखा जा सकता । हेनरी मुझे शेर के पंजे के नीचे दबा छोड़कर भाग गया था और उसकी उस दिन की जरा-सी बुजदिली के कारण मेरा जीवन वीरान हो गया लेकिन फिर भी उसे फांसी के फन्दे से बचाने की खातिर मैंने पुलिस को झूठा बयान दिया ।"

"अब हेनरी मर चुका है ?"

"हां ! पिछले महीने वह एक कार दुर्घटना में मारा गया था । मैंने अखबार में यह समाचार पढ़ा था ।"

"और उसे लोहे के पंजे का क्या हुआ ?"

"वह भी उसने कहीं फेंक-फांक दिया होगा । हमारे खेमों के पास एक गन्दे पानी का तालाब था, शायद उसी में हो ।"

मैं चुप रहा ।

वह भी कुछ न बोली ।

कई क्षण बोझिल-सा सन्नाटा छाया रहा । फिर मैं उठ खड़ा हुआ और उससे विदा मांग कर द्वार की ओर बढ़ गया ।

द्वार के पास पहुंचकर मैं एकदम मुड़ा और बोला - "एक बात आप से कहना चाहता हूं, मिसेज स्मिथ । आत्महत्या करना कायरों का काम है ।"

"लेकिन मैंने यह कब कहा है कि मैं आत्महत्या कर रही हूं ?" - उसने कहा ।

"हर बात कही ही नहीं जाती है । मैं जानता हूं अपने जीवन का पटाक्षेप करने के लिए ही आपने यह घटना मुझे सुनाई है । जीवित रहना एक महान कर्तव्य है । जीवन जैसा भी हो उसे सहन करना चाहिए ।"

मिसेज स्मिथ का उत्तर दिल हिला देने वाला था । उसने एकाएक अपने चेहरे से नकाब हटा दिया और उसे प्रकाश की ओर करती हुई बोली - "क्या ऐसा जीवन भी सहन किया जा सकता है ?"

मैं दहल गया । शब्द उस चेहरे की भयानकता का वर्णन नहीं कर सकते । चेहरा तो वह था ही नहीं । कई स्थानों से खाल गायब थी । जहां खाल थी, वहां उसकी रंगत बुरी तरह बिगड़ी हुई थी और खाल हड्डियों की ओर से पड़ने वाले खिंचाव के कारण सिकुड़ गई थी । नाक और निचला होंठ एकदम गायब थे । निचला होंठ न होने के कारण दांत बड़े वीभत्स रूप से बाहर निकल पड़ रहे थे । एक कान आधा कटा हुआ था, और दो गहरे खड्डों के बीच में से उदासी भरी चमकदार आंखें झांक रही थीं ।

मैं वह दृश्य बर्दाश्त नहीं कर सका और फौरन वहां से बाहर निकल गया ।

लगभग तीन दिन बाद मुझे डाक से एक पार्सल मिला । उसमें पोटेशियम साइनायड से भरी एक शीशी थी और साथ में एक पत्र था जिसमें केवल इतना लिखा था - मैंने जीवन को इसी रूप में जीने का निश्चय कर लिया है । आत्महत्या के लिए जो कुछ मैं संजोकर रख रही थी, वह भेज रही हूं ।

उस बहादुर महिला का ख्याल आज भी आ जाता है तो करुणा से दिल भर उठता है ।

समाप्त